IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''रामचरितमानस में वर्णित आध्यात्मिक मूल्यों की शैक्षिक विवेचना''

***Kalpana Jangid, ** Dr. Satpal Swami**

*****Rsearch Scholar, Department of Education, (Geeta Co-Educational T.T. College, Gharshana, Shri Ganganagar- 335711) MGSU Bikaner, 334004, Rajasthan, India

******Research Guide, Department of Education, (Geeta Co-Educational T.T. College, Gharshana, Shri Ganganagar- 335711) MGSU Bikaner, 334004 Rajasthan, India

ABSTRACT

श्री राम नवमी भगवान राम के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाई जाती है, जो सत्य, करुणा और भक्ति के प्रतीक हैं। श्रद्धा, उत्सव और सांस्कृतिक महत्व के अलावा श्री राम नवमी में एक गहरा आध्यात्मिक सार है, जो भक्तों को भगवान राम की कालातीत शिक्षाओं को समझने और अपनी आध्यात्मिक यात्रा के लिए प्रेरणा पाने के लिए आमंत्रित करता है। भगवान राम के जन्म की कथा दिव्य महत्व में डूबी हुई है। अयोध्या में राजा दशरथ और रानी कौशल्या के घर जन्मे भगवान राम के पृथ्वी पर आने का उद्देश्य सत्य (धर्म) को बनाए रखना और असत्य (अधर्म) को हराना है। महाकाव्य रामायण में लिपिबद्ध उनकी जीवन यात्रा सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अच्छाई को आलोकित करने वाली प्रकाश की किरण के रूप में कार्य करती है।

श्री रामनवमी मात्र ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक या पौराणिक महत्व से परे जाती है। यह बुराई पर सदाचार, अंधेरे पर प्रकाश और घृणा पर प्रेम की विजय का प्रतीक है। आध्यात्मिक गुरु पूज्य बाबू जी महाराज ने अपनी पुस्तक **"रियलिटी एट डॉन"** में कहा है कि कोई भी समाज आध्यात्मिक मूल्यों और प्रेम के बिना जीवित नहीं रह सकता। भगवान राम आत्मविश्वास, साहस, दूरदर्शिता, करुणा और क्षमा के शाश्वत उदाहरण हैं। रामायण इन मूल्यों का वर्णन करने के लिए एक आदर्श महाकाव्य है।

कूटशब्दः रामचरितमानस, धर्म, कर्म, आध्यात्मिक मूल्य।

प्रस्तावना :

आध्यात्म का उद्देश्य मनुष्य के आंतरिक और बाह्य जगत में संतुलन स्थापित करना है, मनुष्य को इस तरह विकसित होने में मदद करना की बाहर जीवन और जगत में घटित होने वाली किसी भी घटना से व्यक्ति का आंतरिक संतुलन ना बिगड़े।

वो आवेश और आवैगो के वशीभूत होकर अनर्थ और विपरीत और नकारात्मक प्रतिक्रिया ना करे और अपने और दूसरों के अकल्याण का हेतु ना बने।

आध्यात्मिक प्रक्रिया का उद्देश्य मनुष्य को हर स्थिति में शांत, स्थिर और समता पूर्वक अपने और समस्त के कल्याण करने वाले चेतन और समर्थ व्यक्ति के रूप में विकसित और प्रतिष्ठित करना है। और रामायण कथा है, इतिहास है मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन चरित्र की, यह परम आध्यात्मिक दस्तावेज और शिक्षक है।

यहां हम देखते है की सभी पात्र कैसे अपने स्वधर्म में स्थित है और किस तरह अपने कर्म कर्तव्यों का निष्ठा पूर्वक पालन करके जीवन और इतिहास में अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है कि आज सात आठ हजार वर्षों पश्चात भी रामायण और राम हमारे जीवन का आधार है, हमारे लिए परम पूजनीय और आदरणीय है।

श्रीराम का संपूर्ण जीवन एक स्थित प्रज्ञ का है, जो जीवन के किसी भी समय में कैसी भी परिस्थिति में बिना किसी विचलन और भ्रमित या कुंठित हुए बगैर अपने कर्तव्य कर्म का, पूरी निष्ठा और नियम बद्ध रूप से, श्रेष्ठतम तरीके से पालन किया।

श्रीराम का पूरा जीवन त्रासदियों और असफलताओं का लंबा सिलसिला है, लेकिन वो कभी भी विपरीत और अनचाही स्थितियों में भी अपने धर्म और कर्तव्य से विमुख नहीं हुए, कोई शिकायत या पलायन नहीं किया।

उन्होंने सदा अपने सभी धर्मों का मर्यादा पूर्वक पालन किया एक व्यक्ति और एक आदर्श राजा के रूप में और संपूर्ण जगत के लिए, शौर्य, साधना और धर्म और कर्तव्य निष्ठता, की अलौकिक और अद्भुत मिसाल कायम की, जिसके लिए वो आज तक संपूर्ण विश्व में जाने और पूजे जाते हैं। हमारे यहां रामायण और पुराण, महज कथा कहानियां नहीं है, वो इस महान भूमि के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक दस्तावेज है, जिनमें जीवन के समस्त रहस्यों की कुंजियां योजनाबद्ध रूप से संग्रहित है, विशिष्ट अर्थ और महत्व की समस्त बातों का खजाना है।

रामायण सभी मनुष्यों के लिए आदर्श जीवन व्यवहार और कर्म की सहज मानवीय पाठशाला है, महत्तम सांसारिक और आध्यात्मिक कल्याण की उपलब्धि के लिए, इसमें कोई पांडित्य और ज्ञान की प्रतिष्ठा नहीं है, यह विवेक पूर्ण और मर्यादित तरीके से जीवन जीने की कला और कौशल सीखने का विज्ञान है, प्रबंध है।

श्रीराम अवतारी पुरुष है, धर्म की परम अभिव्यक्ति का मानवीय प्रकटीकरण, उनका जीवन और चरित्र ही सबसे बड़ी पाठशाला है, स्वयं को साधने और निर्मित करने के लिए अपने श्रेष्ठतम स्वरूप और गुणवत्ता के साथ। यह वास्तविक और परम कल्याणकारी है, इसमें आस्था रखनेवालों के लिए और इससे शिक्षा और कल्याण उपलब्ध करने की इच्छा रखनेवालों के लिए जानने और खोजने वालों के लिए एक रहस्यमय खजाना है और ना समझो के लिए प्रेरणास्पद महान बोध कथाएं।

जय मां जानकी, जय श्री राम,

रामायण न केवल राम और सीता की एक कहानी ही नहीं है, बल्कि इसके दार्शनिक और आध्यात्मिक महत्व भी हैं, जो बहुत कम लोग जानते है : **'रा' का अर्थ है प्रकाश, 'मा' का अर्थ है मेरे भीतर, मेरी आत्मा।** इसलिए, राम का अर्थ है मेरी आत्मा के भीतर का प्रकाश। राम का जन्म दशरथ और कौशल्या के संयोग से हुआ था। दशरथ का अर्थ है '10 रथ'। दशरथ 5 ज्ञानेंद्रियों और 5 कर्मेन्द्रियों का प्रतीक है और कौशल्या का अर्थ है कौशल। 10 रथों के कुशल सवार

राम को जन्म दे सकते हैं। राम का जन्म अयोध्या में हुआ था। अयोध्या का अर्थ है एक ऐसा स्थान जहाँ कोई युद्ध नहीं हो सकता। जब हमारे मन में कोई संघर्ष नहीं है, तो मन प्रकाशित हो जाता है।

हमारी आत्मा राम है, हमारा मन है सीता, हमारी सांस या जीवन–शक्ति (प्राण) हनुमान है, हमारी जागरूकता लक्ष्मण, हमारा अहंकार है रावण। जब मन (सीता) अहंकार (रावण) द्वारा चुराया जाता है, तो आत्मा (राम) को बेचैनी हो जाती है। अब (राम) स्वयं मन अर्थात् (सीता) तक नहीं पहुँच सकता है।

रावण रूपी अहंकार की माया अनेक रूपों में मन और आत्मा को भरमाती और कष्ट देती है किन्तु आत्मा की शक्ति परेशान तो हो सकती है लेकिन पराजित नहीं हो सकती। इसमें आत्मा को जागरूकता (लक्ष्मण) और प्राण (हनुमान) की मदद लेनी पड़ती है, सद्गुणों की सेना का निर्माण करना होता है, फिर धर्म और अधर्म के परस्पर बाण चलते हैं, जिससे अंततः अहंकार (रावण) का नाश हो जाता है और मन (सीता) का पुनर्मिलन आत्मा (राम) से हो जाता है। मन और आत्मा के परस्पर संतुलित सामंजस्य से शरीर चलता है। वास्तव में रामायण हर समय हर मनुष्य के भीतर होने वाली एक शाश्वत घटना है, अब यह हम पर निर्भर करता है कि हमारे भीतर राम और रावण किसकी विजय होती है! **राम+अयण = रामायण।**

राम परमेश्वर का पर्याय है। अयण का अभिप्राय मार्ग से है। वह पथ या मार्ग जो ईश्वर की तरफ जाता है रामायण हुआ। राम चरित मानस भी रामायण ही है। जिसके लिये गोस्वामी जी लिखते हैं: **"नाना पुराण निगमागम सम्वदं यद निगादिते रामायणं क्वचिदन्यतो पि"** अर्थात रामायण में जोभी लिखा है वह वेद– पुराण सम्मत ही है और इसमे अन्यथा कुछ भी नहीं है।

इस प्रकार वो हिदायतें, तरीके जिस पर चलकर परम्श्वेर तक पहुंचा जा सके रामायण हुआ। आप कहोगे कि इसमें तो बहुत कुछ लिखा है जो विवादास्पद है। इसके लिए यह भी संकेत किया गया कि इसमें राम तक पहुचने का मार्ग तो है, पर उसे गुप्त रखा गया है, जिससे विवाद नहो।

हरित भूमि तृण संकुल, समुझि परहिं नहिं पंथ।
जिमि पाखण्ड विवाद से लुप्त भये सद्ग्रन्थ।।

अब अगर ईश्वर तक का पहुंच – मार्ग गुप्त रखा गया है तो आप उसे ढूंढ नहीं पाओगे। उसे कोई भेदी ही उजागर करेगा जिसे संत सद्गुरु कहते हैं।

अतः रामायण पढ़ने से सही लाभ तब तक प्राप्त नहीं होगा जब तक भेदी उसे आप को बता न दे, राम तक के पहुंच–मार्ग का रहस्य खोल न दे।

रामायण अक्सर सत्य पर असत्य की विजय की अमर गाथा मानी जाती रही हैं। नारायण के दो द्वारपाल जय और विजय श्रापवश क्रमशः रावण और कुंभकरण के रूप में जन्म लिए और नारायण को उन्हें श्राप मुक्त करने के लिए वध करना पड़ा।

पर कहा जाता है कि अगर कुछ भी हो रहा है तो उसमें विधाता की कुछ न कुछ लालसा और स्वार्थ होती है, रामायण के बाद खुद ब्रह्मा जी ने बाल्मीकि को रामायण रचना की आज्ञा दिए। दरअसल विधाता यह चाहते थे कि रामायण से लोगों में एक आदर्श जीवन जीने का संदेश जाए। राम एक मर्यादा पुरुषोत्तम और आदर्श पुरुष है, विकट से विकट परिस्थितियों में उन्होंने धैर्य को नहीं छोड़ी, वह अपनी अवतार रूप में दुनिया को कर्म योग की शिक्षा देते रहे।

यह बात समझा जा सकता है कि वह पुरुष जिसका राज्य अभिषेक होने वाला हो वनवास मिल गया, कहां राज महल में रहने वाले, राजसी जीवन जीने वाले जंगलों में आ गए, जंगलों में तरह तरह के कष्ट झेले, और जब इससे भी

पूरी ना हुई तो पत्नी का अपहरण हो गया, एक आम मानव की उस समय क्या दुर्दशा होगी यह सोच से परे है, पर राम धैर्य की अनोखी मिसाल देते हैं, वह जंगल–जंगल घूमते हुए अपनी ताकत को बढ़ाते हैं, वानरों (वन में रहने वाले नर) को एकत्रित करते हैं। और पूरी धैर्य और योजना के साथ रावण का सर्वनाश कर सीता को वापस पाते हैं। यहां राम का सीता के प्रति प्रेम झलकता है। यह झलकता है कि एक आम मानव अपने प्रेम के लिए दुनिया का सर्वशक्तिमान रावण से भीड़ जाता है।

रामायण की एक बड़ी सीख है विविधता में एकता। इस महाकाव्य में राजा दशरथ की तीनों रानियों और चारों बेटों का चरित्र अलग–अलग होता है। लेकिन इस विविधता के बावजूद उनमें किस तरह की एकजुटता रहती है यह हर परिवार के लिए दुःख के समय से बाहर निकलने की सीख है।

भाइयों का ऐसा प्यार जहां लालच, गुस्सा या विश्वासघात घर नहीं कर पाया, ये एक बड़ा उदाहरण है। एक और जहां लक्ष्मण ने 14 साल तक भाई राम के साथ वनवास किया वहीं दूसरे भाई कैकयी के पुत्र ने राजगद्दी के अवसर को ठुकरा दिया। इसके बजाय, उन्होंने भगवान राम को उन्हें माफ करने और राजकाज संभालने का आग्रह किया क्यों कि इस पर राम का ही हक था। भाइयों के प्यार की ये सीख हमें लालच और सांसारिक सुखों के बजाय रिश्तों को महत्व देने के लिए प्रेरित करती है।

यह ग्रंथ हमें अच्छी संगति के महत्व को बताता है। कैकयी राम को अपने पुत्र से ज़्यादा चाहती थी लेकिन दासी मंथरा की बुरी सोच और गलत बातों में आकर वह राम के लिए 14 वर्षों का वनवास मांग लेती है। हनुमान जी ने भगवान राम के प्रति अटल विश्वास और प्यार का परिचय दिया निःस्वार्थ सेवा हमें सिखाती है कि एक दोस्त की ज़रूरत के समय किस तरह मदद की जाती है। भगवान राम प्यार, दया और सकारात्मकता की प्रतिमूर्ति हैं और यदि हममें से कोई भी 10 प्रतिशत भी अपने दैनिक जीवन में उतार लेता है तो वो खुशहाल और संतुष्ट जीवन जी सकता है। उनका शांत और दया भाव से एक पुत्र, पति, भाई और एक राजा की जिम्मेदारियों का निर्वहन करना हमें आपसी प्रेम और सम्मान जैसे मानवीय गुणों से अवगत कराता है समाज की बुराइयों पर जीत हासिल करने के लिए हमें आज के जमाने में रामायण की सीख को उतारने की आवश्यकता है पर राम मानव रूप में इतने कुशल दिखे, इसका श्रेय जाता है अध्यात्म को, ध्यान लगाने की शक्ति को, बाल्मीकि ने राम के गुरुकुल काल में अध्यात्मिक बातों पर जबरदस्त प्रकाश डालते हुए आत्मा, परमात्मा, ध्यान, जैसी चीजों का खास वर्णन किया है। अध्यात्म खुद को पहचानने का मार्ग है, यह जानने का मार्ग है कि आप की शक्तियां अनंत है, और यह संभव होता है अपने मन को स्थिर रखने से,महाभारत में भी जब अर्जुन का चिड़िया के आंख पर निशाना लगाने का प्रसंग जाता है, तब उनका कंसंट्रेट करने का शक्ति का ही जिक्र होता है, जो जितना खुद को समझ पाता है वह उतना ही परमात्मा से मिलता जाता है और उसकी शक्तियां तेजी से बढ़ती जाती है। ध्यान और मनन जिसे अध्यात्म कहते हैं रामायण में इसका पुरजोर समर्थन और व्याख्या मिलता है।

रामायण' शब्द का अर्थ राम आयाण अर्थात् राम का घर। ताकि मनुष्य जान सकें राम का घर कौन सा है? और कैसे उस घर तक पहुँच सकता है? तुलसीदास जी कृत **'राम चरित मानस'** मतलब की किस तरह से राम का चरित्र मानस के अंदर प्रकट हो।

रामचरितमानस के सात कांड के माध्यम से तुलसीदास जी ने मनुष्य के जीवन लक्ष्य यात्रा आरम्भ से अंत तक पहुँचने का मार्ग प्रसस्त किया–

❖ श्री रामचरितमानस का स्वरूप :–

श्री रामचरितमानस की रचना सात काण्डों में पूर्ण हूई, जिसका स्वरूप संक्षिप्त रूप में निम्न प्रकार है :–

1. **बालकाण्ड** :–
   - आकाशवाणी
   - पुत्रेष्टि यज्ञ
   - अहिल्या का पत्थर हो जाना
   - रामजन्म और ज्योतिष षास्त्र
2. **अयोध्याकाण्ड** :–
   - जलवाणी
   - मनोवैज्ञानिक गुरू वषिष्ठ
   - मृतक के षव को सुरक्षित रखना
   - आकाषवाणी
3. **अरण्यकाण्ड** :–
   - जयन्त की कुटिलता और राम का ब्रह्मास्त्र
   - अस्त्र – सहस्त्र
   - सीता का अग्नि में रक्षा कवच
   - लक्ष्मण रेखा
   - आकाष मार्गी रथ
4. **किष्किन्धाकाण्ड** :–
   - रूप बदलना
   - आकाश मार्ग
   - सुग्रीव को राज्य दिलवाना
5. **सुन्दरकाण्ड** :–
   - छायाग्रहिणी पद्धति
   - रूप बदलना
   - पुलिस व्यवस्था
   - रामसेतु का निर्माण
   - वास्तुकला और षिल्पषास्त्र
   - अखाड़ा अभ्यास व्यायाम षालाएँ
   - पर्यावरण विज्ञान

6. **लंकाकाण्ड** :–

- चिकित्सा विज्ञान
- पुष्पक विमान

7. **उत्तरकाण्ड** :–

- जीव विज्ञान
- आकाष वाणी

1. बालकाण्डः जिसमें समझाया परमात्मा की भक्ति करना है तो बालक बन जाना। चतुराई, चालाकी, कपट छोड़ देना। माने निष्कपट हो जाते है। और भगवान को निर्दोष व्यक्ति अच्छे लगते है।

2. अयोध्या काण्डः कहते है उसका जीवन अयोध्या बन जाएगा क्योंकि राम जी अयोध्या में निवास करते है। ये अयोध्या नहीं जो उप्र में है। अयोध्या का अर्थ **'अवध तहाँ जहँ राम निवासु, तहँ दिवस जहँ भानु प्रकासू'**– जहाँ उस ब्रह्म का प्रकाश हो जाता है, अयोध्या है। इस शरीर रूपी मंदिर को अयोध्या कहा।

3. अरण्य काण्डः कहते है जिसका जीवन अयोध्या बन जाएगा, यह संसार उसके लिए एक वन बन जाएगा। फिर वो वन में आसक्त नहीं होता। संसार से जुड़ नहीं जाएगा, अपनी यात्रा पूरी करके वास्तविक लक्ष्य को मिल जाएगा। उसे जिसे अपने भीतर तत्त्वरूप में प्रभु मिल जाते है।

4. किष्किंधा काण्डः जिस वक्त मनुष्य समझ जाएगा कि मुझे संसार में कुछ समय के लिए बसना है फिर मंजिल पर पहुँचना है। उस वक्त किष्किंधा काण्ड का आरम्भ होगा। फिर वो महापुरुषों की संगत करेगा, गुरमुख से मित्रता करेगा। क्योंकि किष्किंधा काण्ड के अंदर भगवान राम की सुग्रीव से मैत्री होती है। और इसी में हनुमान जी राम जी से मिलते है।

5. सुंदर काण्डः जीवन सुंदर हो जाएगा। क्योंकि सुंदर काण्ड के अंदर महत्त्वपूर्ण बात आती है। भगवान–भक्त–भक्ति तीनों का एक ही जगह मिलाप होता है। भगवान; राम, भक्त;हनुमान, ब्रह्म की शक्ति सीता और भक्ति के द्वारा शक्ति अर्जित की जाती है। जिसको भगवान की असल भक्ति मिल गई उसका जीवन सुंदर हो जाएगा।

6. लंका काण्डः जो दशम द्वार पर अपने विकारों से विजय प्राप्त कर अपने जीवन युद्ध से जीत जाता है। अयोध्या वासी रामजी का स्वागत करते हुए अपने घरों में दीप प्रज्वलित करते है। ये भीतरी तिमिर को मिटाकर प्रकाश की ओर बढ़ने का संकेत देता है।

7. उत्तर काण्डः जिसको अपने जीवन का उत्तर मिल गया, लक्ष्य मिल गया वह जीवन जीत गया। उत्तर काण्ड में पूरी रामायण का निचोड़ है। केवल अंतर्जगत का सार है। तो यह है रामायण के माध्यम से मनुष्य के लिए आध्यात्मिक यात्रा का संदेश!

समस्या कथन :–

''रामचरितमानस में वर्णित आध्यात्मिक मूल्यों की शैक्षिक विवेचना''

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा दार्शनिक एवं ऐतिहासिक अनुसंधान की पृष्ठभूमि में विचारधाराओं की व्याख्या करके वर्तमान समय की आवष्यकता को ध्यान में रखते हुए **''रामचरितमानस में वर्णित आध्यात्मिक मूल्यों की शैक्षिक विवेचना''** करना है। प्रस्तुत षोध में दार्शनिक एवं ऐतिहासिक विधि अध्ययन इसी सन्दर्भ में किया गया है। इसके अतिरिक्त कहीं–कही यथास्थान किया गया है।

अतः शोधार्थी के द्वारा षोध में दार्षनिक एवं ऐतिहासिक विधि का उपयोग किया गया है।

निष्कर्ष

रामायण केवल एक पवित्र ग्रंथ के रूप में पूजनीय ऐतिहासिक कथा नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान का भंडार है। यह धर्म (धर्म आधारित कर्तव्य) की अवधारणा को स्पष्ट करती है और इससे विचलित होने के परिणामों को दर्शाती है। जीवन की चुनौतियों का सामना करने में भगवान राम की विनम्रता, वीरता और समता आध्यात्मिक विकास के लिए प्रयास करने वाले व्यक्तियों के लिए कालातीत सबक के रूप में काम करती है।

श्री रामनवमी एक उत्सव है। उत्सव मनाने का क्या अर्थ है? उत्सव का अर्थ है कि जिस व्यक्ति के कारण हम उत्सव मना रहे हैं, उसके गुण भी विशेष रूप से हमारे दिलों में प्रतिध्वनित होने चाहिए। अन्यथा यह बहुत कृत्रिम, मात्र कर्मकांड हो जाता है। तो यह हमें आत्मनिरीक्षण करने की याद दिलाता है। हमारे हृदय व्यक्ति के विकास के साथ–साथ वैश्विक चेतना, विश्व शांति के विकास का नेतृत्व कर सकते हैं – जिसका हम सभी प्रचार करने के लिए तैयार हैं, और प्रचार करने में रुचि रखते हैं। ध्यान हमें इस विकास का अवसर देता है जिसमें अपने अंतर में जाकर हम पाते हैं कि भगवान राम हमारे हृदय के भीतर हैं।

संदर्भ सूची

1. **गुप्ता, डॉ. एस. पी. गुप्ता, डॉ. अलका** : ''आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्यायें,'' शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, 2005 पृ.सं. 149
2. **देवराज, डॉ. नन्द किशोर** : ''भारतीय दर्शन,'' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
3. **सरीन, डॉ शशिकला, सन 2008** :– 'षैक्षिक अनुसंधान विधिया'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 2।
4. **शर्मा, आर. के., सन् 2007** :– षिक्षा के दर्षनषास्त्रीय एवं समाजषास्त्रीय आधार।
5. **सिंह, डॉ. विजयपाल,** ''तुलसी के रामकथा काव्य।''
6. **श्री रामचरितमानस,** सटीक मझला साईज।
7. **गर्ग, डॉ. प्यार,** ''आध्यात्म दर्षन विज्ञान''